बहुसंख्यक है।

भारत में अल्पसंख्यक
(Minorities in India)

भारत एक बहुलवादी देश है क्योंकि यहाँ विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी निवास करते हैं। हिन्दू बहुसंख्यक हैं तो मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसी, यहूदी भारत में विभिन्न अल्पसंख्यक समुदायों के प्रवास की लम्बी अवधि के दौरान उनका कुछ सीमा तक भारतीयकरण भी हुआ है। सभी धर्मों में नीति के सामान्य नियम, सभी मानव प्रेम, समानता, सुविचार, सुवचन और सुआचरण पर जोर देते हैं। भारतीय समाज की यह धार्मिक बहुलता उसके लिए धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय नीति की अनिवार्यता को प्रकट करती है। भारतीय समाज की समृद्धि और ऐतिहासिक परम्परा में, सभी धर्मावलम्बी समान रूप से भागीदार हैं। इसीलिए भारत का सन्देश ही मानव-प्रेम है।

भारत में निम्नलिखित अल्पसंख्यक सम्प्रदाय पाए जाते हैं—

(1) मुसलमान (Muslims)—इस्लाम धर्म को मानने वालों को मुसलमान कहा जाता है। मुस्लिम भारतीय समाज में पाया जाने वाला सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह है। इस्लाम धर्म भारतभूमि में अरब भूमि से आया। **हजरत मुहम्मद** (लगभग 571-632 ई०) ने अरब में इस्लाम धर्म का प्रतिपादन किया। ऐसी मान्यता है कि ईश्वरीय पुस्तक 'कुरान' का मूल पाठ तख्तियों पर लिखा हुआ सातवें स्वर्ग में रखा है और अल्लाह के हुक्म से **जब्रील** ने उसे मुहम्मद साहब को सुनाया और उन्होंने उसे वर्तमान रूप में प्रस्तुत किया।[4] 'कुरान' शामी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'पाठ' है। प्रारम्भ में मुहम्मद साहब को अपने ही लोगों का विरोध सहना पड़ा। उनसे परेशान होकर उन्हें खुद 24 सितम्बर, 622 ई० को मक्के से मदीने की ओर प्रस्थान करना पड़ा। तभी से मुस्लिम संवत् 'हिजरी' प्रारम्भ हुआ। भारत में इस्लाम का पदार्पण अरब सागर के मार्ग द्वारा मुस्लिम व्यापारियों के आने-जाने से शुरू हुआ। सांतवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही कई मुस्लिम व्यापारियों के जत्थे मालाबार और काठियावाड़ के इलाकों में बस गए। 712 ई० में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध को विजय किया। 24 जून, 1206 ई० को सबसे पहला मुस्लिम शासक दिल्ली की गद्दी पर बैठा। 1526 ई० में प्रसिद्ध मुगल वंश का शासन प्रारम्भ हुआ। इस भाँति इस्लाम और हिन्दू धर्म की परस्पर अन्तर्क्रिया अनेक शताब्दियों की है। इस्लाम मानव-मात्र के भाईचारे पर आधारित, मूर्ति-पूजा का विरोधी तथा सीधा-सच्चा धर्म है। 'अल्लाह के सिवा दूसरा भगवान नहीं है, और मुहम्मद साहब उसके पैगम्बर हैं' जो इस बात पर यकीन लाए वे मुसलमान कहलाते हैं। 'कुरान शरीफ' पवित्र एवं ईश्वरीय पुस्तक है। दिन में पाँच बार मक्के की ओर मुँह करके नमाज पढ़ना व शुक्र (जुमे) के दिन सार्वजनिक रूप से सामूहिक नमाज में भाग लेना, अपनी आमदनी का ढाई प्रतिशत दान करना तथा जीवन में एक बार अवश्य मक्के की यात्रा (हज) करना, इस्लाम के अन्य आधार स्तम्भ हैं। इस्लाम में भी कई सम्प्रदाय हैं, जिनमें प्रमुख सम्प्रदाय **सुन्नी** तथा **शिया** हैं। इन दोनों में अन्तर ऊपरी है, कोई गहरा नहीं है। भारत में सुन्नी सम्प्रदाय का बाहुल्य है, परन्तु शिया सम्प्रदाय के लोग भी बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा, मुर्शिदाबाद और अवध के शासक रहे थे। यूँ तो वे सारे भारत में ही फैले हैं लेकिन उनका अधिकांश घनत्व अवध, रामपुर, मुजफ्फरनगर तथा

4. Budh Prakash, **Bhartiya Dhram Avam Sanskriti**, p. 137.

हैदराबाद में है। शियाओं में प्रमुख मत-सम्प्रदाय खोजा, दाऊदी तथा सुलेमानी बोहरा हैं। इसी भाँति सुन्नियों में भी अहमदिया जैसे अनेक मत हैं।

हिन्दुओं और मुसलमानों के लगभग एक हजार वर्ष के इस सम्पर्क का स्वाभाविक परिणाम ही एक-दूसरे से प्रभावित होना था। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू जातियों को इस्लाम में दीक्षित करने वाले मुस्लिम नेताओं ने उन्हें अपने स्थानीय रीति-रिवाज बनाए रखने की छूट दे रखी थी। इस्लाम जाति-पाँति का कट्टर विरोधी है। लेकिन भारत में इस धर्म का भी ऐसा भारतीयकरण हुआ कि मुसलमानों में जाति-पाँति का प्रवेश हो गया। इसी भाँति इनके कुछ त्योहारों पर भी हिन्दू त्योहारों की छाप पाई जाती है। इसके सूफी सम्प्रदाय ने हिन्दुओं को बहुत प्रभावित किया है। कबीर और नानक की वाणी पर सूफी सन्तों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

इस्लाम में आज दो प्रमुख धाराएँ एक साथ प्रवाहित होती हुई दिखाई देती हैं—एक, रूढ़िवादी विचारधारा है जो परम्परावादी विचार-व्यवस्था और जीवन-पद्धति में कोई संशोधन करने के लिए तैयार नहीं है। आधुनिकीकरण और बुद्धिवाद की वह विरोधी है। वह इस्लाम की परम्परावादी अस्मिता स्पष्ट बनाए रखना चाहती है। दूसरी, वह उदारवादी विचारधारा है जो इस्लाम के मौलिक सिद्धान्तों को बनाए रखते हुए उसका बौद्धिकरण और आधुनिकीकरण के साथ समन्वय करना चाहती है। यह उदारवादी इस्लामी विचारधारा भारत में धर्मनिरपेक्ष राज्य की मुख्य धारा के साथ समन्वय को लक्ष्य और मुस्लिम हित के रूप में समझती है। उचित ही लिखा गया है कि, "भारतीय मुसलमानों में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है कि दो असंगठित बिखरे हुए समूह बन गए हैं। एक, वह है जो इस्लाम के सिद्धान्तों तथा धर्मनिरपेक्ष राज्य के आदर्शों के बीच, जैसे भी हो वैसे, समन्वय करना चाहती है और दूसरी, जो इस बात में यकीन रखती है कि एक धार्मिक समुदाय के रूप में मुसलमानों की परम्परागत अस्मिता बनाए रखी जानी चाहिए।"[5]

(2) ईसाई (Christians)—भारतीय समाज का दूसरा प्रमुख अल्पसंख्यक सम्प्रदाय ईसाइयों का है। ईसाई धर्म का भारत से सम्पर्क अपने प्रारम्भिक दिनों में ही हो गया था। इस धर्म के प्रवर्तक ईश्वर-पुत्र यीशू मसीह (Jesus Christ) थे, जिनका अवतार लगभग 4 ई० पू० में फिलीस्तीन के गेलीली प्रदेश के नजारथ स्थान में कुमारी मेरी की कोख से हुआ था। इनका परिवार बड़ा गरीब किन्तु गौरवपूर्ण परिवार था जो बढ़ईगिरी करता था। यीशू मसीह पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु उनके हृदय में मानव-प्रेम कूट-कूट कर भरा था। वे धनिकों के अहंकार और अत्याचार के विरोधी थे और निर्बलों और गरीबों के लिए अपार करुणा लिए थे। प्रेम, सदाचार और दुखियों की सेवा का उन्होंने सन्देश दिया। मानव-समता में उनका अटूट विश्वास था। अपने शत्रु को भी क्षमा और बिना भेदभाव के सबकी सेवा ये यीशू मसीह के मूलमन्त्र थे। उनके विचार में गरीब, सताए हुए, अनपढ़ लोग सौभाग्यशाली हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनके लिए सुरक्षित है; अमीर और अत्याचारी अभागे हैं क्योंकि उनके पापों के कारण उन्हें नरक के दुःख भोगने पड़ेंगे। उनके प्रेम-भरे ये सन्देश उस वक्त के यहूदी पुरोहितों को भला कहाँ सहन होते। उनकी शिकायत पर रोमन प्रशासक पाइलेट ने उन्हें क्रूस पर मेखों से जड़कर मारने का मृत्युदण्ड दिया। फलस्वरूप उन्हें यही दण्ड दिया गया। वे सचमुच अपने बलिदान द्वारा सारी मानव-जाति के पापों का प्रायश्चित कर गए।

1798 ई० में पुर्तगालियों के भारत में आगमन के बाद स्थानीय जनता का ईसाई धर्म में धर्म-परिवर्तन करने पर जोर दिया जाने लगा। उन्होंने इस कार्य के लिए राजनीतिक शक्ति का भी प्रयोग किया जिसकी वजह से भारतीयों में ईसाई धर्म के प्रति रोष की भावना भी फैली। पुर्तगालियों

5. See, Gazetteer of India, Vol. 1, p. 481.

Scanned with CamScanner

के बाद डच, फ्रेंच तथा अंग्रेज भी भारत आए। भारत पर प्रभुत्व के लिए हुई इन यूरोपीय शक्तियों की परस्पर प्रतियोगिता में अंग्रेजों की विजय हुई। परन्तु अंग्रेजों ने भारत के साथ धार्मिक-तटस्थता की नीति बरती। उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए शिक्षा, धन और सेवा को साधन बनाया, बल को नहीं।

ईसाई धर्म विभिन्न मतों के संघों (चर्च) के रूप में संगठित धर्म है। चर्च संगठन में धर्माधिकारियों के स्पष्ट पद-सोपान हैं। ईसाई पादरियों व ननों ने वास्तव में सेवा के भी बहुमूल्य कार्य किए हैं। मिशनों द्वारा चलाए गए स्कूलों और अस्पतालों ने भारतीय गरीब जनता की बड़ी सेवा की है और आज भी कर रहे हैं। ईसाई धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदाय **कैथोलिक** तथा **प्रोटेस्टैण्ट** हैं। भारतीय समाज में इन दोनों ही सम्प्रदायों के अनेक चर्च क्रियाशील हैं।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद यह आशा की जाती थी कि ईसाइयों द्वारा धर्म प्रसार की क्रिया में शिथिलता आएगी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ है। अब यह कार्य भारतीय मूल के ईसाइयों द्वारा ही अधिक किया जा रहा है। विदेशी धार्मिक पदाधिकारियों को शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र तक सीमित रखा जाता है। निश्चित ही, धर्म-परिवर्तन द्वारा ईसाई धर्म का प्रसार बढ़ा ही है। परन्तु यह सब धीरे-धीरे किया जा रहा है। साथ ही, भारत में ईसाई-धर्मावलम्बियों को यह श्रेय भी दिया जाना चाहिए कि उन्होंने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भारत की सांस्कृतिक और राजनीतिक मुख्य धारा के साथ अति शीघ्र एकीकरण का सफल आदर्श प्रस्तुत किया है। इस एकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ईसाई व अन्य समुदायों के हृदय में यह जागरूकता आई है कि वे महान एवं जटिल रूप में विभेदीकृत भारतीय समाज के एक अंग हैं और उन्हें अपनी मातृभूमि भारत की समष्टिवादी संस्कृति को अपने-अपने योगदान से समृद्ध करना है।

(3) सिक्ख (Sikhs)—सिक्ख भी भारत के अल्पसंख्यकों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सिक्ख धर्म भारतीय भूमि की उपज है। इस धर्म के संस्थापक **गुरु नानकदेव** (1469-1539 ई०) हिन्दू खत्री परिवार में जन्मे थे। उन्होंने 'एक निराकार ओंकार' परमेश्वर में विश्वास की सीख दी। वे जाति-पाँति के भेदभावों के घोर विरोधी थे। आडम्बरपूर्ण संस्कारों और कर्मकाण्ड में भी उनका विश्वास नहीं था। 'जपजी' ग्रन्थ में उनकी काव्यमयी वाणी संगृहीत है। उन्होंने देश का ही नहीं, विदेशों का भी भ्रमण किया। उस अनिश्चयों और निराशाओं से भरे युग में उनकी सीधी और सच्ची वाणी जन-भाषा में थी और शाश्वत सत्यों का उद्घोष थी। उन्होंने सदाचार और निर्लेप जीवन की सीख दी। सिक्ख शुद्ध शब्द 'शिष्य' का ही रूप है। गुरु नानक के बाद नौ अन्य गुरुओं ने उनकी परम्परा को आगे बढ़ाया। वे गुरु हैं—**अंगद** (1539-1552), **अमरदास** (1552-1574), **रामदास** (1574-1581), **अर्जुन** (1581-1606), **हरगोविन्द** (1606-1645), **हरराय** (1645-1661), **हरकिशन** (1661-1664), **तेगबहादुर** (1664-1675) तथा **गोविन्द सिंह** (1675-1708)। सभी गुरुओं ने सिक्ख धर्म के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। गुरु नानक तो इसके संस्थापक थे ही, गुरु अंगद ने पंजाबी लिपि को आधुनिक गुरुमुखी का रूप दिया। गुरु अमरदास ने स्त्रियों की मुक्ति के लिए आवाज उठाई और परदा प्रथा तथा सती-प्रथा का विरोध किया। गुरु रामदास ने गुरु का चौक, जिसे आज अमृतसर कहते हैं, की नींव रखी। गुरु अर्जुन ने वहाँ एक सरोवर व हर मन्दिर का निर्माण कराया और उसे सिक्ख धर्म का केन्द्रालय बनाया। उन्होंने 'गुरुग्रन्थ' अथवा आदिग्रन्थ का भी संकलन करवाया। अपने उत्साहपूर्ण धार्मिक कार्यों से उन्होंने मुगल सम्राट जहाँगीर को रुष्ट कर दिया। उन पर विद्रोही शहजादे खुसरो को शरण देने का आरोप लगाया गया और 1605 ई० में यातनाएँ देकर उन्हें शहीद कर दिया गया।

Scanned with CamScanner

गुरु अर्जुन का बलिदान सिक्ख इतिहास में एक नया मोड़ था। गुरु हरगोविन्द ने सिक्खों को सैनिक शिक्षण प्राप्त करने और सशस्त्र होने की सलाह दी। वे स्वयं भी दो तलवार रखते थे—एक उनकी **पीरी** (अर्थात् आध्यात्मिक सत्ता) तथा दूसरी उनकी **मीरी** (अर्थात् सांसारिक सत्ता) की प्रतीक थी। उन्होंने कई सफल युद्ध भी किए। उनके बाद हालात बड़ी तेजी से बदले। गुरु गोविन्द सिंह ने निश्चय किया कि अधर्म के विरुद्ध युद्ध के लिए सिक्ख समुदाय को तैयार करना होगा। 1699 ई० में बैसाखी के दिन 'खालसा' का जन्म हुआ और 'पंचप्यारों' को खालसा में दीक्षित किया गया। तभी से पाँच 'ककार' धारण करने की भी प्रथा चली—अर्थात् प्रत्येक सिक्ख के लिए केश, कंघा, कृपाण, कड़ा और कच्छा धारण करना अनिवार्य बनाया गया। अधर्म के विरोध में धर्म-युद्ध के सैनिकों के रूप में सिक्ख धर्म के अनुयायियों को संगठित किया गया।

गुरु गोविन्द सिंह भारत के इतिहास के अद्वितीय महापुरुष हैं। उन्होंने राष्ट्र-निर्माण का अनोखा कार्य किया। उनके पंचप्यारों में भारत के विभिन्न प्रदेशों और जातियों के लोग थे। पहले उन्होंने उन्हें दीक्षित किया फिर उनके हाथों स्वयं खालसा की दीक्षा ली। सचमुच ही वे स्वयं ही गुरु और स्वयं ही शिष्य थे। उन्होंने अपने पिता का ही नहीं वरन् अपने चारों पुत्रों का भी बलिदान दिया। अपने बाद उन्होंने 'गुरु ग्रन्थ' को ही शीश नवाने का आदेश दिया। उन्होंने तो अपने यशोगान को भी वर्जित कर दिया और कहा कि जो कोई मुझे परमेश्वर कहेगा वह घोर नरक में पड़ेगा। वे किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। वे अधर्म, अनीति और अत्याचार के विरोधी थे। भारत की आध्यात्मिकता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व बलिदान कर उस महान् ज्योति ने मानव-मात्र का सही पथ-प्रदर्शन किया है।

सिक्ख धर्म की मुख्य शिक्षाएँ इस प्रकार हैं—एक निराकार ईश्वर, उसी के नाम का जाप, सदाचारी जीवन, और मानव-सेवा। यही उसके आधार हैं। यह धर्म आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म में विश्वास करता है। सामूहिक प्रार्थना तथा सामूहिक सहभोज (लंगर) इसकी संस्थाएँ हैं। इस भाँति, इस धर्म में जाति-भेद के लिए कोई स्थान नहीं है।

पिछली शताब्दियों में सिक्ख धर्म में भी अनेक मत उभर आए हैं। उसके प्रमुख सम्प्रदाय इस प्रकार हैं—नानकपन्थी, निरंकारी, निरंजनी, सुधरासाही, साँवलसाही, धीरमलिया, सेवापन्थी, सत करतारी, निर्मल, उदासी, निहंग तथा नामधारी। इनमें अन्तर ऊपरी और औपचारिक-मात्र हैं, गहरे नहीं।

सिक्ख धर्म ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में और आजादी के बाद आधुनिक भारत के निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया है। यह एक वीर और साहसी समुदाय है, जिसने देश के बाहर जाकर भी सफल प्रवास का उदाहरण प्रस्तुत किया है। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड और अफ्रीका में लाखों सिक्ख बसे हैं।

(4) बौद्ध (Buddhists)—भारत का एक अन्य अल्पसंख्यक समूह बौद्ध लोगों का है। भारतभूमि में जन्मा बौद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो पूर्वी एशिया व पूर्वी-दक्षिणी एशिया में तो फैला है परन्तु भारत में इसके अनुयायी सागर में बूँद के बराबर हैं। सदस्यता की दृष्टि से यह धर्म विश्व में चौथा स्थान रखता है। इसके प्रणेता गौतम बुद्ध, शाक्य वंश के महाराज शुद्धोदन के पुत्र थे। इनका कार्यकाल ईसा से छह शताब्दी पूर्व है। इनका नाम **सिद्धार्थ** था। बचपन से ही इनका हृदय मानव-दुःखों; जैसे बुढ़ापा, बीमारी या मृत्यु के प्रति करुणा से भरा था। वे मानव-मात्र को इन दुःखों से छुटकारा दिलाने का मार्ग खोजना चाहते थे। इनका विवाह राजकुमारी **यशोधरा** से हुआ। इनके एक पुत्र **राहुल** भी था। इस सब में रहते हुए भी उनका मन जीवन के रहस्य खोजने में लगा था। 29

Scanned with CamScanner

वर्ष की अवस्था में सभी राजसी वैभव छोड़ सिद्धार्थ ने एक रात अपना राजमहल त्याग दिया और सत्य की खोज के मार्ग पर चल पड़े। वे चिन्तन-मनन, कठोर तप करते छह वर्ष घूमते रहे। अन्त में एक दिन ये गया में बोधि-वृक्ष के नीचे ध्यान-मग्न बैठे थे कि इनका अन्तरमन सत्य के प्रकाश से भर गया और ये गौतम बुद्ध या महात्मा बुद्ध कहलाने लगे।

उस समय भारत में ब्राह्मणवाद के कर्मकाण्डों का बड़ा बोलबाला था। अनेक पशुओं की बलि दी जाती थी। महात्मा बुद्ध ने इस आडम्बरपूर्ण कर्मकाण्ड की निस्सारता प्रकट की। उन्होंने कठोर तप द्वारा शरीर को कष्ट देना भी व्यर्थ बताया। उनका मार्ग 'मध्यम मार्ग' था और प्रत्येक प्रकार की अति के विरुद्ध था। उनके अनुसार दु:खों का स्रोत तृष्णा है। इस तृष्णा का ही अन्त करना है। उनका कहना था कि निर्वाण प्राप्त करने का प्रत्येक मानव का अधिकार है और इसकी प्राप्ति वह सदाचार के द्वारा ही कर सकता है। सम्यक् विचार, सम्यक् वाणी और सम्यक् आचरण ही मुक्ति के द्वार हैं। प्राणिमात्र पर दया तथा प्रेम, क्षमा और सेवा ही तपस्या है। लगभग 45 वर्ष तक वे अपना धर्म प्रचार करते रहे। 80 वर्ष की आयु में कालिया में 486 ई० पू० में उन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया।

बौद्ध धर्म के अनुसार, कोई व्यक्ति जन्म से बड़ा नहीं होता। व्यक्ति ऊँचा और नीचा तो अपने आचरण से होता है। धर्म प्रचार के लिए भिक्षुकों को संघ के रूप में संगठित किया गया। इस धर्म को जहाँ एक ओर **अशोक** जैसे महान् सम्राट ने अपनाया तो **आम्रपाली** जैसी वेश्या भी संघ में सम्मिलित हुई। संघ के द्वार सभी के लिए खुले थे। संघ की व्यवस्था प्रजातान्त्रिक थी। बौद्ध भिक्षु व भिक्षुणियाँ संन्यासी जीवन के नियमों में रहकर धर्म के कार्य को समर्पित थे। यही वह धर्म है जिसके अनुयायी सुदूर देशों में गए और वहाँ सत्य, अहिंसा, प्राणिमात्र पर दया एवं प्रेम का सन्देश फैलाया।

महात्मा बुद्ध के निर्वाण के 3 शताब्दी बाद बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया—**हीनयान** तथा **महायान**। हीनयान सम्प्रदाय ने बुद्ध की मौलिक शिक्षा को कठोरता से अपनाए रखा। आज इसके अनुयायी बर्मा (म्यांमार), श्रीलंका, कम्पूचिया और वियतनाम में हैं। महायान सम्प्रदाय ने महात्मा बुद्ध में ईश्वरत्व को देखा और उनके भव्य मन्दिर बनवाए, भगवान बुद्ध की भक्ति और पूजा में निर्वाण प्राप्ति का मार्ग देखा। इस सम्प्रदाय का प्रभाव क्षेत्र चीन, तिब्बत, कोरिया तथा मंगोलिया है।

भारत में 8वीं शताब्दी आते-आते बौद्ध धर्म का लोप हो गया। इसके कई कारण यह है कि इसके नीतिशास्त्र और दर्शन में ब्राह्मणवाद से कोई गहरा अन्तर नहीं था। हिन्दू धर्म के आचार्यों ने धीरे-धीरे बुद्ध को भी अवतारवाद के घेरे में ले लिया और उन्हें राम व कृष्ण की भाँति विष्णु का अवतार घोषित कर दिया। बौद्ध धर्म की अनेक बातों का हिन्दू धर्म में समावेश हो गया। वास्तविकता तो यह है कि बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म में विलीन हो गया। दूसरा कारण यह भी रहा है कि इसमें संन्यासी जीवन पर अधिक जोर था, वह साधारण गृहस्थ के लिए नई संस्थाओं का विधान नहीं बना पाया। तीसरे, बौद्ध संघों में ऐसे लोग भी प्रवेश पा गए जिनके लिए बौद्ध धर्म का बाना आराम से जिन्दगी बिताने का एक नाटक-मात्र था। ऐसे लोगों के भ्रष्ट आचरण ने इन संघों की छवि को क्षति पहुँचाई।

पिछले कुछ वर्षों में हम भारत में बौद्ध धर्म में पुनर्जागरण देखते हैं। दलित वर्ग के नेता **डॉ० अम्बेडकर** ने इस धर्म का गहन अध्ययन किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि अस्पृश्य जातियों के लिए हिन्दू धर्म में रहते हुए मुक्ति का कोई उपाय नहीं है। उन्होंने स्वयं भी बौद्ध धर्म स्वीकार किया और हजारों की संख्या में सामूहिक धर्म-परिवर्तन कराए। बहुत-से ये बौद्ध अपने को **नव-बौद्ध** कहते हैं। आज भी बौद्ध धर्म के प्रचार के प्रयास किए जा रहे हैं।

Scanned with CamScan

(5) जैन (Jains)—'जैन' का शाब्दिक अर्थ है 'विजेता'। बौद्ध धर्म की भाँति इस धर्म के संस्थापक **वर्धमान महावीर** भी वैशाली के क्षत्रिय राजवंश में पैदा हुए। वे गौतम बुद्ध के समकालीन और आयु में कुछ बड़े थे। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने गृह त्याग किया और 12 वर्ष तक कठोर तप करके 42 वर्ष की आयु में उन्हें अशोक वृक्ष के नीचे चिन्तन-मनन अवस्था में 'सत्य-ज्योति' का प्रकाश मिला। तभी से वे 'जैन' कहलाए। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी शिक्षा का प्रसार किया।

जैन धर्मावलम्बियों के अनुसार, जैन धर्म एक आदिधर्म है। वह वैदिक धर्म से अलग हुआ कोई आन्दोलन नहीं था। महावीर तो **चौबीसवें तीर्थंकर** थे। उनसे पूर्व 23 तीर्थंकर और हो चुके थे। आदि तीर्थंकर **ऋषभदेव** थे। इस धर्म के अनुसार 'कैवल्य पद' (अर्थात् मोक्ष) प्राप्त करने का त्रिविध मार्ग है जिसे त्रिरत्न कहा जाता है—सम्यक् विश्वास, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् आचरण। जैन धर्म का सार इस वाक्य में निहित है—"अपना कर्त्तव्य करो और इसे जहाँ तक हो सके मानवीय ढंग से करो।" सभी जैन कर्म और मोक्ष में विश्वास करते हैं। मोक्ष का अर्थ कर्म की बेड़ियों से मुक्ति प्राप्त करना है। लगभग 82 ई० पू० में जैन धर्म भी दो सम्प्रदायों में बँट गया—**दिगम्बर** तथा **श्वेताम्बर**। दोनों ही सम्प्रदाय जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं।

जैन धर्मावलम्बी आज लगभग सारे भारत में ही फैले हैं। परन्तु उसका अधिक संकेन्द्रण नगरों में ही है। मैसूर, बम्बई (मुम्बई) और गुजरात में वे बड़े व्यापारियों के रूप में प्रतिष्ठित हैं। जैन धर्म में दान की बड़ी महिमा है। वे बड़ी मात्रा में दान-संग्रह करते हैं और उसके द्वारा जैन धर्म के विद्यालय तथा गरीबों के कल्याण के कार्य करते हैं। जैन मन्दिरों का निर्माण तथा रख-रखाव भी इसी के माध्यम से होता है।

जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है। अनेक जीवों के रूप में, यहाँ तक कि देवताओं के रूप में भी आत्मा जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसी रहती है। इसी से छुटकारा पाना, कैवल्य पद प्राप्त करना अर्थात् मोक्ष प्राप्त करना है। प्रत्येक आत्मा में अनन्त शक्ति है, अनन्त समझ है। कर्म के द्वारा ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। **महावीर** के अमर शब्दों में, "हे मानव ! तू अपना आप मित्र है, तू अपने से अलग मित्र की चाहना क्यों करता है? सच्चा विजयी वीर वह है जो अपनी वासनाओं और इच्छाओं को, न कि अपने सह-प्राणियों को, परास्त करता है। स्वयं अपने आप से लड़ो—बाहरी शत्रुओं से क्यों लड़ते हो?" इस भाँति, जैन धर्म का मानव-मात्र के लिए यह सन्देश है कि वह अपनी स्वयं ही सहायता कर पूर्णता को प्राप्त करे।

(6) पारसी (Zoroastrians)—पारसी भी भारत का एक महत्त्वपूर्ण अल्पसंख्यक समूह है। पारसी धर्म अथवा जरथुस्त्रवाद (Zoroastrianism) भारत-भूमि के बाहर का धर्म है। पारसियों का भारत में आगमन 8वीं सदी में हुआ। ये ईरान के मूल निवासी हैं। जब ईरान पर मुसलमानों का कब्जा हो गया तो अनेक पारसी वहाँ से भारत की ओर प्रस्थान कर आए। 786 ई० में ये काठियावाड़ के डियु क्षेत्र में आ बसे। वहाँ 15 वर्ष रहने के पश्चात् ये लोग गुजरात के संज्ञान प्रदेश में जा बसे।

इस धर्म के आदि संस्थापक जरथुस्त्र (Zarathushtra) हैं। यह धर्म भी वैदिक धर्म की भाँति अति प्राचीन धर्म है। कुछ विद्वानों के अनुसार महात्मा जरथुस्त्र का जन्म ईसा से 5,000 वर्ष पहले हुआ था। किसी जमाने में इसका प्रचार मिस्र, रोमन साम्राज्य और ब्रिटेन तक था। भारत की दृष्टि से देखा जाए तो इस धर्म का बहुत महत्त्व है क्योंकि इस धर्म के इतिहास और वैदिक धर्म के इतिहास से पता चलता है कि ये दोनों ही मौलिक रूप से आर्य कबीले थे। कब इनमें मतभेद हुआ और ये एक-दूसरे से अलग हो गए? इस प्रश्न का उत्तर दोनों के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाल सकता है। ऋग्वेद और उनकी धार्मिक पुस्तक 'अवेस्ता' (Avasta) में अनेक बातों पर साम्य है। इस धर्म

Scanned with CamScanner

के अनुसार 'आहुर्मजदा' ही एकमात्र ईश्वर है। वही सारे विश्व का स्रष्टा है। जीवन दो विरोधी शक्तियों के बीच संघर्ष का ही रूप है। ये विरोधी शक्तियाँ नेकी (Good) तथा बदी (Evil) हैं। इस **पुण्यात्मा** (स्पेन्तामैन्यु) और **पापात्मा** (अंग्रमैन्यु) के तत्त्वों के संघर्ष के द्वारा ही प्रकृति का विकास होता है, समाज का विकास होता है। अन्त में विजय पुण्यात्मा तत्त्व की ही होती है और पापात्मा तत्त्व पराजित हो जाता है।

'आहुर्मजदा' का प्रतीक पवित्र अग्नि है जो शुद्धता, प्रकाश और उज्ज्वलता की प्रतीक है। इसीलिए पारसी अग्नि की पूजा करते हैं और मन्दिर के रूप में अग्निगृह (आतश-बहराम) का निर्माण करते हैं। इस धर्म का मार्ग त्रिविध मार्ग कहलाता है—**हूमत** (अच्छे विचार), **हूख्य** (अच्छे वचन) और **हूवर्त्त** (अच्छा कर्म) ही इसके आधार हैं। इनकी एक पवित्र पुस्तक **'दिनकर्त'** (Dinkart) में लिखा है, "जब मनुष्य अपनी शक्ति भर एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो उन्हें अधिकतम सुख की प्राप्ति होती है।" **'वेन्दीदाद'** (Vendidad) संन्यासी जीवन का विरोध करती है और जोरदार शब्दों में कहती है, "वह मनुष्य, जो पत्नी रखता है, उस व्यक्ति से कहीं अधिक ऊँचा है जो ब्रह्मचर्य रखता है। वह, जो एक गृह रखता है, उससे ऊँचा है जिसका कोई घर नहीं है। वह, जिसके बच्चे हैं, निस्सन्तान आदमी से ऊँचा है। वह, जो समृद्ध है, उससे कहीं ऊँचा है जिसे पास कुछ नहीं है।" इन धार्मिक विचारों ने पारसी समुदाय को परस्पर सहयोग करने वाले घने सम्बन्धों में बँधे समुदाय के रूप में विकसित कर दिया। उन्हें परोपकार और मानव सेवाओं की भावनाओं से भर दिया। भारत के औद्योगिक विकास में इस समुदाय के लोगों का बहुत बड़ा हाथ है। यही नहीं, बल्कि भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी इस समुदाय ने अनेक अग्रणी नेता दिए; जैसे—**दादा भाई नौरोजी, सोहराब जी बेन्गाली, फारदूनी** तथा **के० आर० कामा।**

पाप-पुण्य के संघर्ष में मनुष्य तटस्थ नहीं रह सकता। इसलिए उसे पुण्य की शक्ति का साथ देना है और सदाचार और शुद्धता के अलावा उनके सामने कोई अन्य मार्ग नहीं है। **ए० आर० वाडिया** (A. R. Wadia) ने इस धर्म की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है, "अपने दो सहस्राब्दियों से अधिक के विजयी जीवन इतिहास में यह धर्म ईरान के पूर्व और पश्चिम दोनों में ही लाखों लोगों के सम्पर्क में आया है और इस अवधि के दौरान इसने अन्य लोगों को अपना नैतिक और आध्यात्मिक उत्साह खुले दिल से हस्तान्तरित किया है। यहूदियों, ईसाइयों तथा मुसलमानों सभी ने चेतन अथवा अचेतन रूप से जरथुस्त्र धर्म के झरनों को जी भर कर पीया है तथा जरथुस्त्रवाद का सर्वोत्तम सार अन्य धर्मों के सर्वोत्तम तत्त्व में जीवित है। सम्भवतः यही वह चेतना रही होगी जिसने प्रशिया पर मुस्लिम विजय के बाद जरथुस्त्रवाद से इस्लाम में धर्म परिवर्तन को सरल ज्योति, जिसने अपने प्रकाश को अनन्त अन्य ज्योतियों को प्रदान किया हो, ईर्ष्या जैसी निम्न भावना से घृणा करेगी ही। अच्छे विचार, अच्छे वचन और अच्छे कर्म जरथुस्त्रियों के ही एकाधिकार नहीं हैं। अति प्राचीनकाल में जरथुस्त्र ने यही सीख दी थी और उनका पुरस्कार यह है कि आज यह धर्म समस्त मानवता की समान विरासत बन गया है।"[6]

(7) यहूदी (Jewish)—यहूदी धर्म भी अति प्राचीन धर्म है। उनका विश्वास है कि उनके पैगम्बर मूसा (Moses), जो उनके प्रथम धर्मवेत्ता माने जाते हैं, से पहले भी उनके अन्य पैगम्बर हुए थे। उनके प्रथम ऐतिहासिक महापुरुष **अब्राह्म** (Abraham) ने ईसा से 2,000 वर्ष पहले यहूदी कबीले के साथ अपना मूल स्थान उर (Ur) छोड़ दिया था और वे अरब के रेगिस्तानों में भटकते हुए अन्त में मिस्र में जा बसे थे तथा उनके शक्तिशाली सम्राटों द्वारा गुलाम बना लिए गए थे। हजरत मूसा

6. A. R. Wadia, The Life and Teachings of Zoroaster, 1938.

Scanned with CamScan

ने ईश्वरीय आदेश के अनुसार उन्हें दासता की बेड़ियों से मुक्त कराया और उन्हें पुन: उस भूमि पर ला बसाया जो दूध और शहद से भरपूर थी। हजरत मूसा को ही 'जवोहा' अथवा 'यवोहा' से, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, 'दस आदेश' (Ten Commandments) प्राप्त हुए थे। आज यहूदियों के धार्मिक ग्रन्थ को **'हिब्रू बाइबिल'** अथवा **'तालमद'** (*Talmad*) या **'तौरेत'** कहा जाता है। इसमें 29 पुस्तकों का संग्रह है और इसे **'पुराना अहमदनामा'** (*Old Testament*) भी कहा जाता है।

यहूदी धर्म एक सरल धर्म है जो प्रमुखतया नैतिक जीवन पर जोर देता है। यहूदियों के अनुसार, सम्यक् आस्था से अधिक महत्त्वपूर्ण सम्यक् आचरण है। प्रत्येक वह व्यक्ति जो सम्यक् आचरण वाला है, उसके लिए स्वर्ग में स्थान सुरक्षित है। यहूदी धर्म संवेगवाद से मुक्त है और स्व-आरोपित कठोर तप द्वारा आत्मपीड़ा तथा संन्यासवाद के विरुद्ध है। **जेरूसलम** (Jerusalem) यहूदियों का पवित्र नगर है।

यहूदियों का इतिहास एक उस धार्मिक समुदाय का इतिहास है जो कई बार अपनी मातृभूमि इजराइल को छोड़कर महाप्रयाण के लिए बाध्य हुआ। यहूदी अमेरिका, यूरोप, रूस तथा अन्य देशों में फैले हुए और बिखरे हुए हैं। ये बड़े कुशाग्रबुद्धि, व्यापार में दक्ष एवं वैज्ञानिक अनुसन्धानों में प्रवीण हैं। यहूदी वह कौम है जिसने अपना कोई देश न होते हुए और विश्व में इधर-उधर फैले हुए भी परस्पर एक राष्ट्र की भावना को बनाए रखा। द्वितीय महायुद्ध के दौरान **हिटलर** ने भी यहूदियों पर बड़े अत्याचार किए और उसके नेतृत्व में नाजी प्रशासन ने हजारों की संख्या में यहूदियों की हत्या की। द्वितीय महायुद्ध के बाद फिलीस्तीन में विजेता यहूदी शक्तियों ने अपना देश इजराइल बनाया।

भारत में यहूदी धर्म के अनुयायी तीन विभागों में विभक्त हैं—**बेनिस्राइल, कोचीन यहूदी** तथा **बगदादी यहूदी**। बेनिस्राइल मुख्यत: बम्बई (मुम्बई) में पाए जाते हैं। ये दो श्रेणियों में बँटे हैं—**गोरा** तथा **काला**। गोरा वर्ग काले से ऊँचा माना जाता है। कोचीन के यहूदी भी इसी प्रकार विभक्त हैं, परन्तु उनमें तीसरा वर्ग भी है जिन्हें कोचीन यहूदियों के दास-रखैलों से उत्पन्न माना जाता है। यह तीसरा वर्ग भी अपने को दो, गोरे और काले यहूदी भागों में बाँटे हुए है जिनमें गोरे यहूदी कालों से श्रेष्ठता का दावा करते हैं। बगदादी यहूदी भारत में बाद में आए हैं और बम्बई तथा कलकत्ता (कोलकाता) में बसे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतभूमि पर अनेक अल्पसंख्यक समुदाय बसते हैं। उनके प्रवास की लम्बी अवधि के दौरान उनका कुछ सीमा तक भारतीयकरण भी हुआ है। सभी धर्मों में नीति के सामान्य नियम, सभी मानव प्रेम, समानता, सुविचार, सुवचन और सुआचरण पर जोर देते हैं। भारतीय समाज की यह धार्मिक बहुलता उसके लिए धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय नीति की अनिवार्यता को प्रकट करती है। भारतीय समाज की समृद्धि और ऐतिहासिक परम्परा में, सभी धर्मावलम्बी समान रूप से भागीदार हैं। भारत का सन्देश ही मानव-प्रेम है और उसकी खोज आध्यात्मिकता है। आज के भौतिकवाद और विज्ञानवाद ने मानव-समाज को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। कदाचित् इसी क्षण के लिए प्रकृति ने भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा है। उसका एक ही मिशन है—मानव-जाति को भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के सन्तुलित योग की शिक्षा देकर सही रास्ता दिखाना। भारत का धार्मिक बहुलवाद भारतीय समाज के लिए गर्व का विषय होना चाहिए। यही वह प्रयोगशाला है जो धार्मिक सहअस्तित्व एवं सहयोग के प्रयोगसिद्ध परिणाम दे सकती है। भारतीय चेतना को इसी समय की माँग को पूरा करना है. यह उसका विश्व के प्रति नैतिक दायित्व है। यदि हम इसमें असफल रहे तो समस्त मानव जाति के साथ हम भी विनष्ट हो जाएँगे। हमें सिद्ध करना है

Scanned with CamScan

कि भारतभूमि वह महान् उद्यान है जहाँ देशी और विदेशी सभी धार्मिक बिरवे पनप सकते हैं, वृक्ष बन सकते हैं, पल्लवित और पुष्पित हो सकते हैं और सारे विश्व को अपनी महक से भर कर सकते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से

Scanned with CamScan